जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

27 नवम्बर, 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने "दारा शिकोह: सांस्कृतिक बहुलवाद और धार्मिक समन्वयवाद" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी की

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आज "दारा शिकोह: सांस्कृतिक बहुलवाद और धार्मिक समन्वयवाद" विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हुआ। यह सम्मेलन जामिया के नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कॉन्फ्लिक्ट रेज़ोल्यूशन द्वारा सेंटर फॉर पर्शियन एंड सेंट्रल एशियन स्टडीज, एसएलएल एंड सीएस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और दारा शिकोह रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक 28 - 29 नवंबर, 2024 को आयोजित किया जा रहा है।

सम्मेलन का उद्घाटन सत्र इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी सभागार में आयोजित किया गया और कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति ने इसकी शोभा बधाई । इनमें जामिया के कुलपति और सम्मेलन के संयोजक प्रो मजहर आसिफ, जामिया के कुलसचिव प्रो मोहम्मद महताब आलम रिजवी और सम्मानित अतिथि, भारत में इस्लामी गणराज्य ईरान के राजदूत महामहिम इराज इलाही और भारत में उज्बेकिस्तान गणराज्य के राजदूत महामहिम सरदार मिर्जायुसुपोविच रुस्तम्बेयेव शामिल रहे । बीज वक्तव्य जेएनयू के सीपीसीएएस, एसएलएल एंड सीएस के प्रो अखलाक अहमद ने दिया जबकि एनसीपीयूएल के निदेशक डॉ मोहम्मद शम्स इक्बाल ने विशिष्ट अतिथि के रूप में काम किया। इस कार्यक्रम में जामिया और जेएनयू के संकाय सदस्यों के साथ-साथ उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, कजाकिस्तान, ईरान आदि के छात्रों और पचास से अधिक मेहमानों ने भी भाग लिया।

सभी विशिष्ट अतिथियों के औपचारिक स्वागत के उपरांत जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ ने अपना स्वागत भाषण मुख्य रूप से फ़ारसी में प्रस्तुत किया। अपने शानदार भाषण में उन्होंने दारा शिकोह के चरित्र पर प्रकाश डाला और उनके योगदान के बारे में विस्तार से बताया। इसके अलावा उन्होंने भारत की समावेशी संस्कृति की समृद्ध ताने-बाने पर चर्चा की और इस बात पर बल दिया कि इस देश ने न केवल विभिन्न धर्मों और उनके अनुयायियों को अपनाया बल्कि उन्हें पनपने भी दिया। कुलपति ने यह कहा कि "कोई भी देश भारत की बराबरी नहीं कर सकता यह एक ऐसी भूमि है जिसने कबीर, रहीम और रसखान जैसे लोगों को जन्म दिया है जहाँ गंगा-जमुनी संस्कृति और समावेशी मानसिकता पनपी है। इस देश के अनूठे दृष्टिकोण ने दारा शिकोह जैसी हस्तियों के उद्भव को बढ़ावा दिया है, जिन्हें लोगों से स्नेह मिला।"

उन्होंने आगे यह कहा कि जिस प्रकार से भारत में फ़ारसी भाषा को अपनाया और प्रचारित किया गया, उससे उन क्षेत्रों के लोग इस भाषा को सीखने और समझने के लिए यहाँ आए। भारत विश्व भर की भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति अपने सम्मान के लिए जाना जाता है।

जामिया के कुलसचिव प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिजवी ने सम्मेलन के बारे में परिचय दिया। बीज वक्तव्य भाषण सीपीसीएएस, एसएलएल और सीएस, जेएनयू के प्रो. अखलाक अहमद ने दिया, जिन्होंने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद करने में दारा शिकोह के योगदान पर विस्तार से बताया, जिससे धर्मों, खासकर सनातन धर्म को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त एनसीपीयूएल के निदेशक डॉ. मोहम्मद शम्स इक्बाल ने अपने भाषण के दौरान दारा शिकोह की विशिष्ट विशेषताओं पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र का समापन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एसोसिएट प्रोफेसर और दारा शिकोह रिसर्च फाउंडेशन के ट्रस्टी सदस्य डॉ. मोहसिन अली द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

भारत और विदेशों से शोधकर्ता और वक्ता दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान अपने संबोधन प्रस्तुत करेंगे। इस कार्यक्रम में बारह शैक्षणिक सत्रों में 120 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए जाएंगे।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया